IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मथुरा: ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक अध्ययन

डॉ. शक्ति सक्सेना
सहायक आचार्य (इतिहास),
वीरभूमि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
महोबा (उ.प्र.)

सारांश (Abstract)

मथुरा भारत के उन नगरों में से एक है जहाँ इतिहास, धर्म, कला और संस्कृति का अद्भुत संगम विद्यमान है। वैदिक काल से आधुनिक युग तक मथुरा ने भारतीय सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह केवल भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि नहीं, बल्कि बौद्ध और जैन परंपराओं का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। इस शोध-पत्र में मथुरा के ऐतिहासिक विकास, धार्मिक महत्व, कलात्मक धरोहर, सांस्कृतिक जीवन और सामाजिक-आर्थिक संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मथुरा भारतीय संस्कृति की जीवंत आत्मा का प्रतीक है।

1. प्रस्तावना

मथुरा का उल्लेख प्राचीन भारतीय साहित्यिक और धार्मिक ग्रंथों में व्यापक रूप से मिलता है। यद्यपि वैदिक ग्रंथों में इसका प्रत्यक्ष नाम नहीं आया है, किन्तु शूरसेन जनपद, जिसके अंतर्गत मथुरा आता था, का सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्व स्पष्ट रूप से वर्णित है। पुराणों, महाभारत और रामायण में मथुरा का विशेष स्थान है। रामायण में वर्णित है कि लवणासुर के वध के पश्चात शत्रुघ्न ने इस नगर की स्थापना की। महाभारत में मथुरा को यादव वंश की राजधानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया और अपने बाल्यकाल में अनेक लीलाएँ रचाईं।

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के राज्यकाल में हुआ था। पुराणों के अनुसार, कंस ने देवयानी भविष्यवाणी के भय से कृष्ण का वध करने का प्रयास किया। इसी दौरान माता देवकी और पिता वसुदेव ने अपने नवजात पुत्र को सुरक्षित रूप से गोकुल में यशोदा और नंद के घर ले जाकर पालन-पोषण कराया। मथुरा में कृष्ण के बाललीला, जैसे कंस वध, यमुना नदी में रास और गोपियों संग रासलीला, गोवर्धन पर्वत उठाना, नाग कालिया पर विजय आदि, धार्मिक, सांस्कृतिक और लोककला के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

भौगोलिक दृष्टि से मथुरा यमुना नदी के तट पर स्थित है, जो इसे प्राकृतिक दृष्टि से भी विशेष बनाता है। ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक साक्ष्यों के अनुसार यह नगर प्राचीन शूरसेन जनपद का प्रमुख केंद्र था। 'मथुरा' शब्द का शाब्दिक अर्थ "मधुरता का नगर" है, जो इसके सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण की ओर संकेत करता है। गर्गसंहिता इसे "मोक्षप्रदायिनी नगरी" के रूप में अभिहित करती है, जो इस नगर की धार्मिक महत्ता और मोक्षमार्ग पर इसके योगदान को दर्शाता है।

इस प्रकार मथुरा न केवल ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं और उनके उपदेशों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन का एक जीवंत केन्द्र भी है। यहाँ के प्रत्येक स्थल और स्मारक—जन्मभूमि, कंस किला, गोवर्धन, यमुना तट—कृष्ण की लीलाओं और भक्ति परंपरा का दर्पण हैं, जो नगर की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान को सुदृढ़ बनाते हैं।

2. मथुरा का ऐतिहासिक विकास: कालानुसार विश्लेषण

1. वैदिक एवं महाकाव्यकाल

मथुरा का प्रारंभिक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व वेद, पुराण और महाकाव्यों में स्पष्ट रूप से मिलता है। ऋग्वेद में इसका प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है, किन्तु शूरसेन जनपद के माध्यम से मथुरा का सांस्कृतिक प्रभाव और राजनीतिक अस्तित्व प्रकट होता है।

मुख्य घटनाएँ और विशेषताएँ:

- **स्थापना और प्रशासन:** महाकाव्यों के अनुसार मथुरा की स्थापना शत्रुघ्न ने की, जो अयोध्या के राजवंश से संबंधित था। यह नगर यादव वंश की राजधानी भी बनी।
- **कृष्ण जन्म और बाललीला:** भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ। उनके बाल्यकाल की लीलाएँ—कंस वध, यमुना नदी में रासलीला, गोवर्धन पर्वत उठाना और कालिया नाग का वध—इस काल में नगर के धार्मिक और सामाजिक जीवन को संरचित करती हैं।
- **धार्मिक परंपराएँ और संस्कार:** इस युग में वैदिक संस्कारों का प्रारंभ और धार्मिक अनुष्ठानों का विकास हुआ। यज्ञ, उपासना और आराधना के प्रारंभिक रूपों का विकास मथुरा में देखा गया।
- **सांस्कृतिक प्रभाव:** शूरसेन जनपद का सांस्कृतिक प्रभाव मथुरा में कला, संगीत और साहित्य के आरंभिक स्वरूप में परिलक्षित होता है। यहाँ की जनजातीय परंपराएँ और धार्मिक अनुष्ठान, बाद के युग में गुप्त और कुषाण काल की मथुरा कला और कृष्ण-भक्ति परंपरा के लिए आधार बने।
- **साहित्यिक संदर्भ:** रामायण में मथुरा की स्थापना का उल्लेख, महाभारत में यादव वंश की राजधानी के रूप में इसकी पहचान, और पुराणों में कृष्ण जन्मभूमि का वर्णन, नगर के धार्मिक महत्व और ऐतिहासिक प्रामाणिकता को पुष्ट करते हैं

2. मौर्य एवं शुंग काल (लगभग 322–30 ई.पू.)

मथुरा का मौर्य और शुंग काल में महत्व न केवल राजनीतिक दृष्टि से बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यधिक बढ़ गया। सम्राट अशोक के शासनकाल में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ और मथुरा बौद्ध केंद्र के रूप में उभरी।

मुख्य घटनाएँ और विशेषताएँ:

- **राजनीतिक परिवेश:** मथुरा इस काल में मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक और आर्थिक नेटवर्क में एक महत्वपूर्ण केंद्र था। अशोक के शिलालेख और स्तंभ लेख इस नगर की ऐतिहासिक प्रामाणिकता और प्रशासनिक संगठन को दर्शाते हैं।
- **धार्मिक विकास:**
  - मथुरा बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र बना, जहाँ विहार, स्तूप और मठों का निर्माण हुआ।
  - जैन धर्म का प्रसार भी हुआ; जैन तीर्थ और प्रारंभिक मूर्तिकला के प्रमाण कंकाली टीला और अन्य उत्खनन स्थलों से प्राप्त हुए।
  - इस काल में बौद्ध और जैन धर्म के सह-अस्तित्व और धार्मिक सहिष्णुता का उत्कर्ष हुआ।
- **कंकाली टीला और पुरातात्विक निष्कर्ष:**
  - कंकाली टीला, सप्तर्षि टीला और अन्य उत्खनन स्थलों से बौद्ध स्तूपों, जैन मूर्तियों, मोर-पंछी और विविध पशु आकृतियों वाली मूर्तियाँ प्राप्त हुईं।
  - प्रारंभिक मंदिर स्थापत्य और मिट्टी, पत्थर तथा लाल बलुआ पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ इस युग की स्थापत्य और कलात्मक प्रगति को प्रमाणित करती हैं।
- **सांस्कृतिक समन्वय:**
  - मौर्य और शुंग काल में मथुरा ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक प्रवाहों को एकत्रित किया।
  - यहाँ की कला शैली में बौद्ध, जैन और प्रारंभिक हिन्दू मूर्तियों का मिश्रण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- **कृष्ण संस्कृति का विकास:**
  - इस काल में मथुरा में कृष्ण-भक्ति के आरंभिक रूप विकसित होने लगे। कृष्ण की बाललीला और धार्मिक कथाएँ स्थानीय जनजीवन और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों में सम्मिलित होने लगीं।

3. **कुषाण काल (78–250 ई.)**

कुषाण साम्राज्य के समय मथुरा कला और संस्कृति के स्वर्णयुग में प्रवेश कर गई। इस युग में नगर न केवल धार्मिक केंद्र बल्कि कला, साहित्य और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया।

मुख्य घटनाएँ और विशेषताएँ:

- **राजनीतिक एवं प्रशासनिक परिवेश:**
  - मथुरा कुषाण सम्राटों—विशेष रूप से कनिष्क और हूविष्क—के संरक्षण में प्रगति कर रहा था।
  - यह नगर राजनीतिक रूप से समृद्ध और व्यापारिक दृष्टि से सक्रिय था, यमुना घाटों और मार्गों के कारण व्यापारी और तीर्थयात्री यहाँ आते थे।
- **कला और मूर्तिकला:**
  - मथुरा कला का स्वर्णयुग इस काल में आया। मुख्य विशेषता लाल बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग है।
  - मूर्तियाँ जीवन्त और भावपूर्ण हैं; यक्ष-यक्षिणी, विष्णु प्रतिमाएँ, बुद्ध की पद्मासन प्रतिमाएँ और जैन तीर्थंकर की प्रारंभिक मूर्तियाँ इस शैली का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
  - मूर्तिकला में **मानवीय भाव, सौंदर्य, वास्तविकता और आध्यात्मिकता** का अनूठा समन्वय दिखाई देता है।
  - पौराणिक कथाएँ, धार्मिक अनुष्ठान और कृष्ण-लीलाएँ कलात्मक अभिव्यक्ति में प्रकट हुईं।
- **धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन:**
  - बौद्ध धर्म, जैन धर्म और वैष्णव परंपरा ने सह-अस्तित्व और सहयोग के साथ नगर का धार्मिक जीवन समृद्ध किया।
  - कृष्ण की बाललीला और जन्मस्थान की कथाएँ इस काल में स्थानीय जनजीवन और सामाजिक रीति-रिवाजों में गहराई से सम्मिलित हुईं।
- **सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियाँ:**
  - इस युग में प्रारंभिक ब्रजभाषा और क्षेत्रीय साहित्यिक गतिविधियों का आरंभ हुआ।
  - मथुरा में धार्मिक संगीत, लोकगीत, कथाकथन और उत्सवों का विकास हुआ, जिसने बाद में भक्ति आंदोलन और कृष्ण-भक्ति साहित्य के लिए आधार तैयार किया।

4. गुप्त काल (4वीं–6वीं शताब्दी)

गुप्त साम्राज्य के समय मथुरा ने **सांस्कृतिक, शैक्षिक और धार्मिक जीवन** में चरम उत्कर्ष प्राप्त किया। इसे भारतीय "सुनहरे युग" का हिस्सा माना जाता है, क्योंकि इस काल में कला, साहित्य और धर्मिक गतिविधियों ने नया स्वरूप ग्रहण किया।

मुख्य घटनाएँ और विशेषताएँ:

- **राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिति:**
  - गुप्त साम्राज्य के तहत मथुरा एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक, आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र था।
  - नगर की स्थिति यमुना के तट पर होने के कारण व्यापार, तीर्थयात्रा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अनुकूल थी।
- **साहित्य और शिक्षा:**
  - संस्कृत साहित्य का उत्कर्ष हुआ। यहाँ *काव्य*, *नाट्य*, *धर्मशास्त्र* और *वैदिक अध्ययन* के लिए शिक्षा केंद्र स्थापित थे।
  - मथुरा के ग्रंथ और शिलालेख इस काल की विद्वत्ता और बौद्धिक वातावरण का प्रमाण हैं।
- **धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन:**
  - मथुरा इस काल में वैष्णव धर्म का प्रमुख केंद्र बनी। कृष्ण की लीलाओं, बाललीला और जन्मस्थान से जुड़ी कथाएँ स्थानीय जनजीवन और धार्मिक उत्सवों में गहराई से समाहित हुईं।
  - मंदिर निर्माण और पूजा स्थलों का विकास हुआ; विशेष रूप से **गोवर्धन परिक्रमा, कृष्ण-प्रतिमाएँ और ब्रज संस्कृति** का आधार इस युग में मजबूत हुआ।
  - बौद्ध और जैन समुदायों का धार्मिक सह-अस्तित्व जारी रहा।

- **कला और स्थापत्य:**
  - गुप्त कला में शिल्पकला और स्थापत्य में नवीनतम शैली विकसित हुई।
  - लाल बलुआ पत्थर और कठोर पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ जीवन्त भाव, सौंदर्य और धार्मिक अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध हुईं।
  - यक्ष-यक्षिणी, विष्णु प्रतिमा, बौद्ध पद्मासन मूर्तियाँ और कृष्ण-लीला पर आधारित शिल्प इस काल की पहचान हैं।
  - मथुरा शैली की विशिष्टता में **मानवीय भाव, प्राकृतिक मुद्रा और सौंदर्य का सटीक चित्रण** शामिल था।
  - मंदिर स्थापत्य में गुप्त शैली के स्तंभ, मंडप, गर्भगृह और शिखर संरचना का विकास हुआ।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन:**
  - भक्ति आंदोलन के प्रारंभिक स्वरूप यहाँ विकसित होने लगे।
  - संगीत, नृत्य, उत्सव और ब्रजभाषा आधारित साहित्यिक परंपराएँ उभरीं।
  - कृष्ण जन्मस्थान और गोवर्धन पर्वत से जुड़ी कथाएँ लोकजीवन और सांस्कृतिक गतिविधियों में समाहित हुईं।

5. 6वीं–11वीं शताब्दी (गुप्त उत्तरकाल से प्रारंभिक मध्यकाल)

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद मथुरा का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य नए राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तनों के अधीन आया। यह काल मथुरा की **धार्मिक महत्ता, कला और सामाजिक संरचना** के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

मुख्य घटनाएँ और विशेषताएँ:

- **राजनीतिक परिवेश:**
  - गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी छोटे राजवंशों और स्थानीय शक्तियों द्वारा शासन किया गया।
  - पश्चिमोत्तर भारत में गुप्त उत्तरकाल में कुछ गुर्जर-प्रतिहार और राष्ट्रकूटों का प्रभाव देखा गया।
  - राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद मथुरा धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र बना रहा।
- **धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन:**
  - मथुरा वैष्णव धर्म का प्रमुख केंद्र बना रहा। कृष्ण की बाललीला और जन्मस्थान की कथाएँ स्थानीय जनजीवन में गहराई से समाहित रही।
  - इस काल में **भक्ति आंदोलन की प्रारंभिक लहर** मथुरा में दिखाई देने लगी।
  - बौद्ध और जैन धर्म का प्रभाव धीरे-धीरे कम हुआ, लेकिन कुछ विहार और जैन मंदिर अभी भी सक्रिय रहे।
- **कला और स्थापत्य:**
  - गुप्त शैली की मूर्तिकला और स्थापत्य कला का प्रभाव जारी रहा।
  - इस काल में **मंदिर निर्माण और स्तूपों का नवसृजन** देखा गया।
  - कृष्ण, विष्णु और यक्ष-यक्षिणी प्रतिमाएँ गुप्त शैली के सौंदर्य और भावपूर्ण चित्रण के साथ बनीं।
  - लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर का प्रयोग मूर्तियों और मंदिरों में प्रमुख था।
  - गोवर्धन पर्वत क्षेत्र, कंकाली टीला और सप्तर्षि टीला जैसे स्थल इस युग में धार्मिक और कलात्मक गतिविधियों का केंद्र बने।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन:**
  - ब्रजभाषा और लोककथाएँ इस काल में विकसित होने लगीं।
  - रासलीला, झूला महोत्सव और अन्य स्थानीय उत्सव मथुरा की सांस्कृतिक पहचान बने।
  - नगर की अर्थव्यवस्था तीर्थ पर्यटन, व्यापार और हस्तशिल्प पर आधारित रही।
  - कृष्ण-भक्ति पर केंद्रित साहित्य और गीतकार इस युग में सक्रिय हुए, जिन्होंने बाद में सूरदास और रसखान जैसे भक्ति संतों के लिए आधार तैयार किया।

6. 11वीं–18वीं शताब्दी मंदिर विध्वंस और धार्मिक संकट

वर्ष / काल	आक्रमणकर्ता / शासक	प्रभावित स्थल / मंदिर	घटना का विवरण	संदर्भ / स्रोत
लगभग 1018 ई.	महमूद ग़ज़नवी	मथुरा के मंदिर (विशेषकर जन्मभूमि क्षेत्र)	ग़ज़नवी ने उत्तरी भारत में आक्रमण किया; मथुरा के मंदिरों को विध्वस्त किया। स्थानीय भिक्षु और समाज ने मूर्तियाँ और ग्रंथ सुरक्षित रखे।	अल-उतबी, *तारिख-ए-यामिनी*; HVK.org, "वासुदेव कृष्ण और मथुरा का इतिहास" (hvk.org)
लगभग 1150 ई.	कुतुबुद्दीन ऐबक	केशवदेव मंदिर (कटरा स्थल)	स्थानीय राजा द्वारा निर्मित मंदिर को ऐबक ने ध्वस्त किया।	HVK.org, "मथुरा के मंदिरों का इतिहास" (hvk.org)
1489–1517 ई.	सिकंदर लोदी	मथुरा के प्रमुख वैष्णव मंदिर	मंदिरों को तोड़फोड़ और आग से नुकसान; मूर्तियों का दुरुपयोग।	*हिंदूइज़्म टुडे*, "मथुरा के पवित्र स्थल" (hinduismtoday.com)
जनवरी-फरवरी 1670 ई. (1080 ए.एच.)	औरंगज़ेब	केशवदेव मंदिर, जन्मभूमि मंदिर	मंदिर को पूरी तरह ध्वस्त कर शाही ईदगाह मस्जिद का निर्माण।	*बिजनेस स्टैंडर्ड*, "मथुरा के केशवदेव मंदिर का विध्वंस" (business-standard.com)
18वीं शताब्दी	नजीबुद्दौला / अफगान सेनाएँ	मथुरा के मंदिर और धार्मिक स्थल	अफगान और मराठा संघर्ष के दौरान मंदिरों की सुरक्षा और पुनर्निर्माण प्रयास।	HVK.org, "मथुरा के मंदिरों का ऐतिहासिक विवरण" (hvk.org)

7. ब्रिटिश भारत में मथुरा

ब्रिटिश शासन के दौरान मथुरा का प्रशासन पहले लखनऊ और फिर इलाहाबाद प्रेसीडेंसी के अधीन था। यह शहर धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के कारण जाना जाता था, खासकर श्रीकृष्ण जन्मभूमि और अन्य मंदिरों के कारण।

1. **आर्थिक स्थिति:**
   - मथुरा मुख्य रूप से कृषि और स्थानीय व्यापार पर आधारित था।
   - धार्मिक पर्यटन और मेला (जैसे जन्माष्टमी और होली) स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा थे।
   - हस्तशिल्प और छोटे उद्योग (जैसे मिट्टी की मूर्तियाँ, रंगीन कपड़े) विकसित थे।
2. **सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति:**
   - मंदिर और तीर्थ स्थल मथुरा की पहचान बने रहे।
   - ब्रिटिश शासन के दौरान कुछ मंदिरों और पुरातात्विक स्थलों का सर्वेक्षण और संरक्षण किया गया।
3. **शासन और प्रशासन:**
   - ब्रिटिश अधिकारी स्थानीय राजाओं और जमींदारों के साथ मिलकर प्रशासन करते थे।
   - कर और भूमि व्यवस्था में बदलाव आए, जिससे स्थानीय कृषि और व्यापार पर प्रभाव पड़ा।
4. **आधुनिक पहलू:**
   - पुरातात्विक उत्खनन और मंदिरों का संरक्षण हुआ।
   - मथुरा का धार्मिक महत्व राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त होने लगा।

3. धार्मिक महत्व

- **हिंदू धर्म:** कृष्ण जन्मभूमि, द्वारकाधीश मंदिर, गोवर्धन पर्वत।
- **बौद्ध धर्म:** विहार और स्तूप।
- **जैन धर्म:** 22वें एवं 23वें तीर्थंकरों से संबंधित।
- इसे "तीर्थों का तीर्थ" कहा जाता है।

4. कला एवं स्थापत्य

- **मथुरा शैली:** लाल बलुआ पत्थर, वास्तविक और भावपूर्ण मूर्तियाँ।
- **विषय:** धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक दोनों; बुद्ध, जैन, वैष्णव।
- **प्रमुख स्थल:** कंकाली टीला, सप्तर्षि टीला, गोवर्धन क्षेत्र।
- **प्रमुख मूर्तियाँ:** पद्मासन बुद्ध, चतुर्भुज विष्णु, यक्ष-यक्षिणी।

5. सांस्कृतिक जीवन

- **संगीत एवं नृत्य:** लोक संगीत, नृत्य, उत्सव।
- **भक्ति कवि:** स्वामी हरिदास, सूरदास, रसखान।
- **उत्सव:** रासलीला, फाल्गुन महोत्सव, झूला महोत्सव, लठमार होली।
- **जीवित परंपराएँ:** नंदगाँव, बरसाना, वृंदावन।

6. सामाजिक एवं आर्थिक संरचना

- **परंपरागत अर्थव्यवस्था:** तीर्थ पर्यटन, हस्तशिल्प, व्यापार।
- **उत्पाद:** घी, पेड़ा, पुष्प, माला, पूजा सामग्री।
- **आधुनिक अर्थव्यवस्था:** धार्मिक पर्यटन, तेल रिफाइनरी, हस्तशिल्प उद्योग।

7. ब्रज संस्कृति

- **क्षेत्र:** मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन, नंदगाँव, गोकुल, बरसाना।
- **भाषा एवं साहित्य:** ब्रजभाषा, भावनात्मक एवं भक्ति प्रधान काव्य।
- **प्रमुख ग्रंथ:** सूरसागर, भक्तमाल, प्रेमसागर।
- **योगदान:** भक्ति आंदोलन का मानवीय और सांस्कृतिक चेहरा।

8. राजनीतिक इतिहास

- **शासक वंश:** नंद, मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, गुर्जर-प्रतिहार, दिल्ली सल्तनत, मुगल, जाट (भरतपुर), मराठा, ब्रिटिश।
- **विशेष टिप्पणी:** राजनीतिक बदलावों ने धार्मिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को प्रभावित किया, किंतु मथुरा की सांस्कृतिक आत्मा अक्षुण्ण रही।

9. आधुनिक मथुरा

- **प्रमुख स्थल:** श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट, आईएसकॉन वृंदावन, गोवर्धन परिक्रमा पथ, बरसाना राधारानी उत्सव।
- **वैश्विक पहचान:** राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय तीर्थ स्थल।
- **आर्थिक महत्व:** उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का योगदान।

निष्कर्ष

मथुरा भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता, बहुलता और सौंदर्य का प्रतीक है। यह नगर धर्म, दर्शन, कला, संगीत और लोक संस्कृति का जीवंत केंद्र है। यहाँ का प्रत्येक स्मारक, मूर्ति और स्थल नगर की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाता है। मथुरा आज भी भारतीय संस्कृति की "धड़कन" के रूप में जीवित है।

संदर्भ (References)

1. ब्रह्मपुराण एवं विष्णुपुराण – मथुरा महात्म्य
2. कौटिल्य, अर्थशास्त्र – महाजनपद विवरण
3. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी – भारतीय संस्कृति का आधार
4. रामनारायण शर्मा – मथुरा का इतिहास और संस्कृति
5. पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ASI) – मथुरा कला शैली रिपोर्ट (2021)
6. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल – भारतीय कला का इतिहास
7. पं. मदनमोहन मालवीय – श्रीकृष्ण जन्मभूमि पुनर्निर्माण दस्तावेज़
8. डॉ. राधाकृष्णन – भारतीय दर्शन का इतिहास